श्रीदत्तबावनी (अभंगवृत्तात)

।। हरिः ॐ ।।

जय योगीश्वर | श्रीदत्त दयाळा |
तूंचि प्रतिपाळा | जगीं आम्हां ||१||
जगाच्या कल्याणा | करूनी निमित्त |
आत्रेयानसूय | प्रकटले ||२||
ब्रह्मादि त्रिमूर्ति | आले एकत्रित |
शरणागतांसी | तारावया ||३||
मनी सांठवावे | द्विभुज देखणे |
सच्चिदानंद हो | अन्तर्यामी ||४||
झोळी खरोखरी | माय अन्नपूर्णा |
हाती कमण्डलु | शान्तिपूर्ण ||५||
कधी चतुर्भुज | कधी सहा बाहू |
अनंतबाहू चि | रूप खरे ||६||
उठा दिगंबरा | चालले कि प्राण |
बाळ मी अजाण | शरणागत ||७||
सहस्रार्जुनाची | ऐकूनीया हांक |
होते ना साक्षात | धावलेले ||८||
ऋद्धि सिद्धी साऱ्या । करूनी बहाल ।
दिधली मुक्तीही । महापदी ||९||
आज कां विलंब । करिसी आत्रेया ।
मज न आलंब । तुजवीण ||१०||
द्विज विष्णुशर्मा । यास तारियेलें ।
श्राद्धभोजनही । सेवियेलें ||११||

जंभदैत्यामुळे । देव जे त्रासले ।
त्यांनाही सहाय्य । तुवां केलें ||१२||
त्याचे मायाजाल । तोडण्याचे तंत्र ।
इंद्राकरवी तूं । घडविलें ||१३||
ऐशा किती लीला | शंभूनेही केल्या |
वर्णाया समर्थ | कोण जगीं ||१४||
राजपुत्र आयु | केलास निष्काम |
घालवूनी त्याचा | काम सारा ||१५||
बोधीयेला यदु | परशुराम ही |
अकाम प्रह्लाद | साध्यदेव ||१६||
कृपा अशी सारी | अगाध की तुझी |
कां न भावे माझी | आळवणी ||१७||
धाव बा अनंता | नको पाहूं अंत |
अर्धे राहील ना | नाम तुझे ||१८||
ब्राह्मणीचे प्रेम | पाहूनी लीलया |
झालास ना पुत्र | तूच स्वतः ||१९||
कलियुगात ह्या | तुझ्या स्मरणाने |
अडाणी धोबीही | उद्धरीला ||२०||
पोटशूळ केला | नष्ट ब्राह्मणाचा |
शेठ विप्र तोही | वांचवीला ||२१||
मग मज कां न | वारीतोस देवा |
कृपादृष्टी करी | एक वार ||२२||
तुझीया दृष्टीने | शुष्क काष्ठासही |
पालवी मज कां | उदासीन ||२३||
वांझ म्हातारीस | पुत्ररत्न दिलें |

मनोरथ तिचें | पूर्ण केले ||२४||
ब्राह्मणाचे कोड | घालवून त्यास |
नितळ कायेने | सजवीले ||२५||
कोरड म्हशीस | दुभती करून |
दरिद्री ब्राह्मणा | सुखी केले ||२६||
साधी घेवड्याची | भाजी खाऊनीया |
त्यास तुवां दिला | हेमघट ||२७||
ब्राह्मणीचा पति | तिरडीवरून |
उठवूनी केला | संजीवन ||२८||
ब्राह्मणपुत्राची | पिशाच्चाची बाधा |
घालवूनी त्यास | सांवरले ||२९||
ब्राह्मणाचा गर्व | हारिला अंत्यजे |
रक्षियेला भक्त | त्रिविक्रम ||३०||
तंतूक नामक | भक्तास क्षणात |
श्रीशैली कैसे बा | पोंचवीले ||३१||
जरी निराकार | एकाच वेळेस |
आठाठ भक्तांचे | घरां आले ||३२||
सेवूनीया त्यांची | प्रसादाची ताटे |
संतोषीले सर्वां | प्रेमभरें ||३३||
यवन राजाची | घालवीली पीडा |
अभेदभावाचा | धडा दिला ||३४||
रामावतारात | शिला तरंगल्या |
वाली नि रावण | मारीयेले ||३५||
कृष्णावतारात | लीला किती केल्या |
गीता सांगितली | अर्जुनास ||३६||

तुझे नाम घेतां | पापीही पुण्यात्मा |
सफल होतात | काज सारे ||३७||
साऱ्या आधी व्याधी | उपाधी टळती |
स्मरणमात्रेनी | शिवकृपे ||३८||
मूठ मारणेसे | ताप नाही होत |
सद्‌भक्त पावतो | निर्वाणही ||३९||
महिषासुर वा | डाकीणी शाकीणी |
पिशाच्चे आसुरी | शक्ति साऱ्या ||४०||
पळून जातात | नाश पावतात |
जिथे आरवते | दत्त धुन ||४१||
धूप लावोनीया | करावे पठण |
दत्तबावनीचे | भक्तिभावे ||४२||
अशोक होतील | पहा सर्व लोक |
मांगल्य सर्वत्र | पसरेल ||४३||
त्यांचे न उरेल | दुःख की दारिद्र्य |
साऱ्या सिद्‌धी जणूं | दासी त्यास ||४४||
दर गुरुवारी | बावन्न पाठांचे |
व्रत आचरिता | वर्षभर ||४५||
काढावा लागेल | वेळ जसा तसा |
उरेल यमाची | भीति काय ||४६||
रूपे जरी बहु | एक दत्तात्रेय |
भजतां निःसंग | मायारंग ||४७||
नामे जरी बहु | दत्त दिगंबर |
ध्यानात रंगावे | एकनामी ||४८||
चारी वेद मात्र | श्वास की तुझेच |

वंदन तुजला | वारंवार ||४९||
तुजसी वर्णितां | शेषही थकतो |
माह्या पामराची | काय कथा ||५०||
दत्तबावनी ही | अनुभवसिद्ध |
खोडी न काढावी | त्रास होतो ||५१||
दत्त तत्त्वमसि | दत्तचि तपसि |
जय श्रीगुरुदेव | दत्त बोला ||५२||
॥अवधूत चिंतन श्री गुरुदेव दत्त॥
================

अजित कुलकर्णी | ह्यांनी पुसियेलें |
दत्तबावनी ती | माहीत कां ||
पूज्य टेंबे स्वामी | यांचे शिष्योत्तम |
रंगावधूत ते | नारेश्वर ||
त्यांनी रचियेली | दत्तबावनी ही |
गुर्जरी भाषेत | आहे खरी ||
अजित म्हणाले | बहार येईल |
मराठी भाषेत | मिळाल्यास ||
रंगावधूतांची | मूळची रचना |
वैश्विक पटली | मिळालीही ||
मित्राची ती इच्छा | प्रभूंचीच आज्ञा |
त्यांनीच रचना | घडवीली ||
सादर करीतो | दासांचा मी दास |
श्रीपाद लक्ष्मण | अभ्यंकर ||
आज जून सोळा | वीसशे बावीस |
नेमका आहे ना | गुरुवार ||

दत्तबावनीचे | व्रतच कांहीसे |
आहे सांगितले | पहा इथे ||
एका पठणास | पांचच मिनिटें |
इतुकाच वेळ | लागतो गा ||
पहावे कोणास | कितीसे जमेल |
अधिकाचे फल | अधिकचि ||
सर्वजन सुखी | आणि निरामय |
राखावे सर्वदा | दत्तात्रेया ||
||अवधूत चिंतन श्री गुरुदेव दत्त||

श्रीदत्तबावन्नी (मूळ गुजराथी रचना)

जय योगीश्वर दत्त दयाळ। तु ज एक जगमां प्रतिपाळ ।।१।।

अत्र्यनसूया करी निमित्त। प्रगट्यो जगकारण निश्चित।।२।।

ब्रम्हाहरिहरनो अवतार, शरणागतनो तारणहार ।।३।।

अन्तर्यामि सतचितसुख। बहार सद्गुरु द्विभुज सुमुख् ।।४।।

झोळी अन्नपुर्णा करमाह्य। शान्ति कमन्डल कर सोहाय ।।५।।

क्याय चतुर्भुज षडभुज सार। अनन्तबाहु तु निर्धार ।।६।।

आव्यो शरणे बाळ अजाण। उठ दिगंबर चाल्या प्राण ।।७।।

सुणी अर्जुण केरो साद। रिझ्यो पुर्वे तु साक्शात ।।८।।

दिधी रिद्धि सिद्धि अपार। अंते मुक्ति महापद सार ।।९।।

किधो आजे केम विलम्ब। तुजविन मुजने ना आलम्ब ।।१०।।

विष्णुशर्म द्विज तार्यो एम। जम्यो श्राद्ध्मां देखि प्रेम ।।११।।

जम्भदैत्यथी त्रास्या देव। किधि म्हेर ते त्यां ततखेव ।।१२।।

विस्तारी माया दितिसुत। इन्द्र करे हणाब्यो तुर्त ।।१३।।

एवी लीला क इ क इ सर्व। किधी वर्णवे को ते शर्व ।।१४।।

दोड्यो आयु सुतने काम। किधो एने ते निष्काम ।।१५।।

बोध्या यदुने परशुराम। साध्यदेव प्रल्हाद अकाम ।।१६।।

एवी तारी कृपा अगाध। केम सुने ना मारो साद ।।१७।।

दोड अंत ना देख अनंत। मा कर अधवच शिशुनो अंत ।।१८।।

जोइ द्विज स्त्री केरो स्नेह। थयो पुत्र तु निसन्देह ।।१९।।

स्मर्तृगामि कलिकाळ कृपाळ। तार्यो धोबि छेक गमार ।।२०।।

पेट पिडथी तार्यो विप्र। ब्राम्हण शेठ उगार्यो क्षिप्र ।।२१।।

करे केम ना मारो व्हार। जो आणि गम एकज वार ।।२२।।

शुष्क काष्ठणे आंण्या पत्र। थयो केम उदासिन अत्र ।।२३।।

जर्जर वन्ध्या केरां स्वप्न। कर्या सफळ ते सुतना कृत्स्ण ।।२४।।

करि दुर ब्राम्हणनो कोढ। किधा पुरण एना कोड ।।२५।।

वन्ध्या भैंस दुझवी देव। हर्यु दारिद्र्य ते ततखेव ।।२६।।

झालर खायि रिझयो एम। दिधो सुवर्ण घट सप्रेम ।।२७।।

ब्राम्हण स्त्रिणो मृत भरतार। किधो संजीवन ते निर्धार ।।२८।।

पिशाच पिडा किधी दूर। विप्रपुत्र उठाड्यो शुर ।।२९।।

हरि विप्र मज अंत्यज हाथ। रक्षो भक्ति त्रिविक्रम तात ।।३०।।

निमेष मात्रे तंतुक एक। पहोच्याडो श्री शैल देख ।।३१।।

एकि साथे आठ स्वरूप। धरि देव बहुरूप अरूप ।।३२।।

संतोष्या निज भक्त सुजात। आपि परचाओ साक्षात ।।३३।।

यवनराजनि टाळी पीड। जातपातनि तने न चीड ।।३४।।

रामकृष्णरुपे ते एम। किधि लिलाओ कई तेम ।।३५।।

तार्या पत्थर गणिका व्याध। पशुपंखिपण तुजने साध ।।३६।।

अधम ओधारण तारु नाम। गात सरे न शा शा काम ।।३७।।

आधि व्याधि उपाधि सर्व। टळे स्मरणमात्रथी शर्व ।।३८।।

मुठ चोट ना लागे जाण। पामे नर स्मरणे निर्वाण ।।३९।।

डाकण शाकण भेंसासुर। भुत पिशाचो जंद असुर ।।४०।।

नासे मुठी दईने तुर्त। दत्त धुन सांभाळता मुर्त ।।४१।।

करी धूप गाये जे एम।दत्तबावनि आ सप्रेम ।।४२।।

सुधरे तेणा बन्ने लोक।रहे न तेने क्यांये शोक ।।४३।।

दासि सिद्धि तेनि थाय। दुःख दारिद्र्य तेना जाय ।।४४।।

बावन गुरुवारे नित नेम।करे पाठ बावन सप्रेम ।।४५।।

यथावकाशे नित्य नियम।तेणे कधि ना दंडे यम ।।४६।।

अनेक रुपे एज अभंग। भजता नडे न माया रंग ।।४७।।

सहस्त्र नामे नामि एक। दत्त दिगंबर असंग छेक ।।४८।।

वंदु तुजने वारंवार। वेद श्वास तारा निर्धार ।।४९।।

थाके वर्णवतां ज्यां शेष। कोण रांक हुं बहुकृत वेष ।।५०।।

अनुभव तृप्तिनो उद्गार। सुणि हंशे ते खाशे मार ।।५१।।

तपसि तत्वमसि ए देव। बोलो जय जय श्री गुरुदेव ।।५२।।

इति श्रीदत्तबावन्नी समाप्त बोलो जय जय श्री गुरुदेव